इकाई - तीन

6. अनुभूति, और अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'साकेत' के काव्य-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। 20

7. 'प्रसाद की कामायनी छायावाद का सर्वांगीण स्वरूप प्रस्तुत करती हैं- साक्ष्यों द्वारा इस कथन की पुष्टि कीजिए। 20

इकाई - चार

8. '' 'राम की शक्तिपूजा' वस्तुतः एक गाथा काव्य है, जिसे निराला ने गाथा की भूमि से उठाकर महाकाव्योचित गांभीर्य देना चाहा है''- इस कथन की समीक्षा कीजिए। 20

9. पंत के काव्य में वर्णित प्रकृति के विविध रूपों की सोदाहरण विवेचना कीजिए। 20

A **(Printed Pages 4)**

Roll No._____

AS- 2167

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

हिन्दी

प्रथम प्रश्न-पत्र

(आधुनिक काव्य-छायावाद तक)

समय : तीन घण्टे **पूर्णांक : 100**

निर्देश : कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के लघु उत्तर दीजिए : 4×5=20

   (क) 'साकेत' महाकाव्य के नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

   (ख) श्रद्धा की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

   (ग) 'सरोज स्मृति' के केन्द्रीय भाव को स्पष्ट कीजिए।

   (घ) 'नौका विहार' कविता के वैशिष्ट्य का निरुपण कीजिए।

   (ङ) 'कामायनी' में निहित रूपक-तत्त्व का परिचय दीजिए।

इकाई - एक

2. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×2=20

(क) आ, अभाव की एक आत्मजे और अदृष्टि-जनी!
तेरी ही छाती है सचमुच उपमोचितस्तनी!
अरी वियोग-समाधि, अनोखी, तू क्या ठोक ठनी,
अपने को, प्रिय को, जगती को देखूँ खिंची-तनी।
मन-सा मानिक मुझे मिला है तुझमें-उपल खनी,
तुझे तभी छोड़ूँ जब सजनी, पाऊँ प्राण-धनी।

(ख) और, उस मुख पर वह मुसक्यान!
रक्त किसलय पर ले विश्राम-
अरूण की एक किरण अम्लान
अधिक अलसाई हो अभिराम।

3. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः10×2=20

(क) भिन्न भी भाव-भंगी में भाती है रूप-सम्पदा,
फूल धूल उड़ा के भी आमोदप्रद है सदा।
फूल, रूप-गुण में कहीं मिला न तेरा जोड़,
फिर भी तू फल के लिए अपना आसन छोड़।

(ख) मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ
मैं शालीनता सिखाती हूँ,
मतवाली सुन्दरता पग में
नूपुर सी लिपट मनाती हूँ।

इकाई - दो

4. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।10×2=20

(क) है अमानिशा, उगलता गगन घन अन्धकार;
खो रहा दिशा का ज्ञान; स्तब्ध है पवन-चार;
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भूधर ज्यों ध्यान-मग्न; केवल जलती मशाल।

(ख) एक ही तो असीम उल्लास
विश्व में पाता विविधाभास,
तरल जलनिधि में हरित विलास;
शान्त अम्बर में नील विकास;
वही उर-उर में प्रेमोच्छवास,
काव्य में रस, कुसुमों में वास।

5. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।10×2=20

(क) श्रृंगार, रहा जो निराकर,
रस कविता में उच्छ्वसित धार
गाया स्वर्गीया-प्रिया-संग-
भरता प्राणों में राग-रंग,
रति-रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदल कर बना मही।

(ख) विस्फारित नयनों से निश्चल,
कुछ खोज रहे चल तारक दल,
ज्योतित कर जल का अन्तस्तल;
जिनके लघु दीपों का चंचल,
अंचल की ओट किए अविरल,
फिरती लहरें लुक-छिप पल-पल!